भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 1281
उत्तर देने की तारीख 28.07.2025

भारत में जनजातीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थिति और विस्तार

1281. श्री सप्तगिरी शंकर उलाका :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में वर्तमान में कार्यरत जनजातीय सांस्कृतिक केंद्रों की संख्या का राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है;

(ख) उक्त केंद्रों में मौजूदा बुनियादी ढांचे और कर्मचारियों की स्थिति क्या है और क्या ये केंद्र समस्त कर्मचारियों के साथ पूरी तरह कार्यात्मक हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या ये केंद्र जनजातीय भाषाओं, साहित्य, प्रदर्शन कलाओं और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेजीकरण, संरक्षण और संवर्धन में सक्रिय रूप से संलग्न हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार की जनजातीय सांस्कृतिक केंद्रों को वंचित क्षेत्रों या महत्वपूर्ण जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों में विस्तारित करने की कोई योजना है; और

(ड.) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है, साथ ही जनजातीय भाषा और सांस्कृतिक पुनरुद्धार के लिए प्रस्तावित स्थान, समय-सीमा और पहल क्या हैं?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): भारत सरकार ने जनजातीय संस्कृति सहित लोक कला और संस्कृति के विभिन्न रूपों के संरक्षण, संवर्धन और परिरक्षण हेतु सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) स्थापित किए हैं जिनके मुख्यालय पटियाला (पंजाब), नागपुर (महाराष्ट्र), उदयपुर (राजस्थान), प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), कोलकाता (पश्चिम बंगाल), दीमापुर (नागालैंड) और तंजावुर (तमिलनाडु) में स्थित हैं। ये क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र देश भर में नियमित रूप से

विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलापों और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं जिसके लिए वे पूरे भारत से लोक/जनजातीय कलाकारों को शामिल करते हैं जो इन कार्यक्रमों के दौरान अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र सभी कलाकारों और शिल्प प्रदर्शनों की मेजबानी के लिए ऑडिटोरियम, प्रदर्शन दीर्घाओं, पुस्तकालयों और शिल्पग्राम / कलाग्राम जैसी अवसंरचनात्मक सुविधाओं के साथ पूरी तरह कार्य कर रहे हैं।

(ग): सभी क्षेत्रीय सामुदायिक केंद्र जनजातीय भाषाओं, कहानियों, शिल्पों और प्रदर्शन कलाओं को जीवित रखने के लिए निम्नलिखित कार्यकलापों को सक्रिय रूप से संचालित कर रहे हैं:-

- स्थानीय लोगों और भाषा विशेषज्ञों की सहायता से लुप्तप्राय जनजातीय भाषाओं और बोलियों का अभिलेखन और प्रलेखन;
- जनजातीय लोककथाओं और मौखिक इतिहास के बारे में पुस्तकों, रिपोर्टों और कहानियों का प्रकाशन,
- जनजातीय शिल्प, लोक रंगमंच, संगीत और नृत्य पर प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यशालाओं का आयोजन करना,
- वार्षिक जनजातीय महोत्सवों, शिल्प मेलों और कला शिविरों का आयोजन,
- अनूठी जनजातीय संस्कृति को साझा करने के लिए कलाकारों को भारत के अन्य भागों में प्रदर्शन करने के लिए नियोजित किया जाता है,
- जनजातीय शोधकर्ताओं, लेखकों और युवा कलाकारों को अध्येतावृत्ति, अनुदान और प्रदर्शन का अवसर प्रदान करके उनका समर्थन।

(घ) एवं (ड.): ऐसा कोई प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन नहीं है।

******